14

प्राथमिक स्तर के शिक्षण में अनुभवात्मक विधि द्वारा अधिगम एक प्रारूप

शरद शर्मा*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने विद्यालयी स्तर की शिक्षा की संरचना में जो प्राथमिक स्तर पर परिवर्तन किए हैं, वे अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं जिसमें जीवन के पहले तीन वर्ष बालवाटिका और अगले दो वर्ष कक्षा 1 और 2 के लिए निर्धारित किए गए हैं। इस तरह बुनियादी स्तर की शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। साथ ही साथ इस स्तर पर शिक्षकों द्वारा पढ़ाने की रटने वाली विधियों की जगह पर अनुभवात्मक विधियों पर बहुत ध्यान दिया गया है जो बच्चों के शिक्षण अधिगम को और रुचिपूर्ण बनाने में सहायक सिद्ध होता है। अनुभवात्मक विधि प्राथमिक स्तर के अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह विधि इस स्तर के बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं के अनुरूप होती है और उनके समग्र रूप से सीखने के अनुभवों को बढ़ाती है। अनुभवात्मक विधि से संवादात्मक और मजेदार कक्षाएँ, गहन और अधिक अनुभवात्मक शिक्षा के लिए रचनात्मक, सहयोगात्मक और खोजपूर्ण गतिविधियों के साथ प्रश्नों को प्रोत्साहित किया जाता है। इस बात को ध्यान में रखकर प्रस्तुत लेख में अनुभवात्मक विधि से शिक्षण कैसे किया जाए, इसका एक प्रारूप और कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर बल डाला गया है जो बुनियादी स्तर के शिक्षकों और अन्य हितधारकों के लिए महत्वपूर्ण होगा।

शिक्षा, बच्चों के सर्वांगीण विकास की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, उनकी अंतर्निहित शक्तिओं का विकास करके उन्हें वास्तविक जीवन के लिए तैयार करती है। इस प्रक्रिया को विद्यालय में संचालित करने का कार्य शिक्षकों से बेहतर और कोई नहीं कर सकता है। शिक्षकों का ये बड़ा दायित्व है कि वे कक्षा में किस तरह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को संचालित करते हैं। कौन-कौन सी विधियों से शिक्षण करा रहे हैं जिससे शिक्षण को और रुचिपूर्ण बनाया जा सके। निस्संदेह यदि शिक्षक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बच्चों के अनुभव के साथ जोड़कर संचालित करते हैं तो बच्चों का अधिगम रुचिपूर्ण और उत्साह पूर्ण होगा। इस तरह

**सहायक आचार्य*, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली 110 024

अनुभवात्मक विधि द्वारा बच्चों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को रोचक बनाया जाता है, ताकि सीखने की प्रक्रिया लंबे समय तक हो और विभिन्न अनुभवों के माध्यम से स्वयं के सीखने पर आधारित हो। यह बच्चों में आलोचनात्मक सोच के साथ-साथ समग्र विकास पर केंद्रित होगा। अनुभवात्मक विधि से बच्चों को पढ़ाए जा रहे पाठों को समझाना भी आसान हो जाता है। इसलिए शिक्षकों को इस विधि को कक्षा में अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार यह विधि शिक्षण की पारंपरिक विधियों से भिन्न है। उदाहरण के लिए, छोटे बच्चों को ध्वनि और उच्चारण का ज्ञान देते समय अनुभवात्मक विधि बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि उन्हें अक्षरों की ध्वनियों से परिचित कराया जाता है और फिर अनुभव के माध्यम से, वे अपने आस-पास, जैसे— घर, टेलीविजन, बाजार आदि की ध्वनियों और शब्दों का अभ्यास करेंगे। इस तरह शिक्षण अधिगम की अनुभवात्मक विधि महत्वपूर्ण हो जाती है।

> "अनुभव आधारित अधिगम पर विशेष बल दिए जाने के अंतर्गत कला-समन्वित शिक्षण को कक्षा प्रक्रियाओं में स्थान दिया जाएगा, जिससे न सिर्फ कक्षा अधिक आनंदपूर्ण बनेगी, बल्कि भारतीय कला और संस्कृति के शिक्षण में समावेश से भारतीयता से भी बच्चों का परिचय हो पाएगा।" (एन.ई.पी. 2020)

'अनुभवात्मक शिक्षण' के कुछ महत्वपूर्ण तत्व

- विषय से चिंतन, आलोचनात्मक विश्लेषण और संश्लेषण करने की क्षमता पैदा करना।
- बच्चों को पहल करने, निर्णय लेने और परिणामों के लिए जवाबदेह होने के अवसर प्रदान करना।
- बच्चों के लिए बौद्धिक, रचनात्मक, भावनात्मक, सामाजिक या शारीरिक रूप से जुड़ने के अवसर प्रदान करना।
- एक सुव्यवस्थित योजना पर आधारित सीखने के अनुभव से प्राकृतिक परिणामों, गलतियों और सफलताओं से सीखने की संभावना उत्पन्न करना।

प्राथमिक स्तर पर अनुभवात्मक विधि के लाभ

सक्रिय सहभागिता— अनुभवात्मक विधि से शिक्षण बच्चों की सक्रिय भागीदारी, व्यावहारिक गतिविधियों और अंत: क्रियात्मक अनुभवों को प्रोत्साहित करती है। सक्रिय सहभागिता बच्चों की अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने और आत्मसात करने में मदद करती है, क्योंकि वे सीधे सीखने की सामग्री का अनुभव करते हैं और उसमें बदलाव भी कर सकते हैं।

समग्र विकास— अनुभवात्मक शिक्षा न केवल शैक्षणिक कौशल, बल्कि सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक पहलुओं को भी संबोधित करके समग्र विकास को बढ़ावा देती है। व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से, बच्चे एक साथ संज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक और सामाजिक कौशलों को विकसित करने में सहयोगी होते हैं।

वास्तविक दुनिया से संबंध— अनुभवात्मक विधि बच्चों को कक्षा में सीखी गई बातों और वास्तविक दुनिया की स्थितियों के बीच संबंध बनाने में सक्षम बनाती है। ज्ञान का यह व्यावहारिक अनुप्रयोग समझ

और प्रासंगिकता को बढ़ाता है, जिससे बच्चों के लिए सीखना अधिक सार्थक हो जाता है।

पूछताछ और आलोचनात्मक सोच— यह जाँच और आलोचनात्मक सोच की भावना को बढ़ावा देता है। समस्या-समाधान और निर्णय लेने की आवश्यकता जैसी गतिविधियों में शामिल होने से, बच्चों में गंभीर रूप से सोचने, स्थितियों का विश्लेषण करने और विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है।

प्रेरणा और रुचि— व्यावहारिक अनुभव पारंपरिक शिक्षण विधियों की तुलना में बच्चों का ध्यान और रुचि अधिक प्रभावी ढंग से आकर्षित करते हैं। इस प्रेरणा से सीखने के प्रति उत्साह बढ़ता है और शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा होता है।

दीर्घकालिक अवधारण— अनुभवात्मक शिक्षा के परिणामस्वरूप अक्सर जानकारी बेहतर बनी रहती है। जब बच्चे सक्रिय रूप से सीखने की गतिविधियों में भाग लेते हैं, तो लंबे समय में उन्होंने जो सीखा है उसे याद रखने और लागू करने की अधिक संभावना होती है।

सामाजिक कौशल विकास— अनुभवात्मक शिक्षण के अंतर्गत आयोजित सहयोगात्मक गतिविधियाँ और समूह परियोजनाएँ बच्चों को प्रभावशाली संप्रेषण, टीम वर्क और सहानुभूति जैसे आवश्यक सामाजिक कौशल विकसित करने के अवसर प्रदान करती हैं।

सांस्कृतिक और विविधता जागरूकता— अनुभवात्मक शिक्षा में विभिन्न संस्कृतियों और दृष्टिकोणों से परिचित करवाया जा सकता है। इससे बच्चों में विविधता के प्रति सराहना विकसित करने और कम उम्र से ही सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देने में मदद मिलती है।

रचनात्मकता और नवीनता— व्यावहारिक अनुभव रचनात्मकता और नवीनता को प्रोत्साहित करते हैं। प्रयोग व अन्वेषण और समस्या-समाधान से बच्चों में एक रचनात्मक मानसिकता विकसित होती है, जो उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं में मूल्यवान हो सकती है।

"सभी चरणों में प्रयोग आधारित अधिगम को अपनाया जाएगा, जिसमें अन्य वस्तुओं के अलावा स्वयं करके सीखना और प्रत्येक विषय में कला और खेल को एकीकृत किया जाएगा और कहानी-आधारित शिक्षणशास्त्र को प्रत्येक विषय में एक मानक शिक्षणशास्त्र के तौर पर देखा जाएगा। साथ ही विभिन्न विषयों के बीच संबंधों की खोज को प्रोत्साहित किया जाएगा। वर्तमान अधिगम प्रतिमान (लर्निंग आउटकम) और वांछनीय अधिगम परिणामों के बीच खाई को पाटने के लिए कुछ विषयों में कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं में परिवर्तन होंगे, जहाँ भी उचित होगा वहाँ इन्हें दक्षता-आधारित अधिगम और शिक्षा की ओर उन्मुख किया जाएगा। आकलन के उपकरणों (जिसमें सीखने 'के रूप में', 'का','के लिए' आकलन शामिल है।) को दिए गए वर्ग के हर विषय के अधिगम परिणामों, क्षमताओं और रुझानों के साथ भी संरेखित किया जाएगा।" (एन.ई.पी. 2020)

क्रियाकलाप का प्रारूप

बच्चे के समग्र विकास के लिए पाठ की योजना बनाते समय निम्नलिखित अनुभवात्मक शिक्षण चक्र (विधि) का उपयोग किया जाता है—

ठोस अनुभव (करना)

बच्चों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने के लिए उन्हें स्कूल के पास के बगीचे या बगीचे में ले जाया जा सकता है। यहाँ बच्चे अलग-अलग आकार-प्रकार के फूलों के साथ खुद को नई सीख में शामिल कर सकेंगे। वे बात करके और माली को ऐसा करते हुए देखकर फूलों को उनके हिस्सों में अंतर करने और उनकी देखभाल करने में सक्षम होंगे। इस यात्रा से उन्हें पर्यावरण और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी विकसित करने में मदद मिलेगी। इस ज्ञान का उपयोग अपने दैनिक जीवन में करेंगे।

चिंतनशील अवलोकन

इस चरण में बच्चों को अपने अनुभव पर विचार करने तथा सीखने और सुधार के लिए तत्पर रहने की आवश्यकता है। बच्चों के बीच बेहतर चिंतन के लिए कक्षा में भूमिका निभाई जा सकती है। बच्चे विभिन्न फूलों की भूमिका निभा सकते हैं, जिन्हें उन्होंने बगीचे में अपनी यात्रा के दौरान देखा था और अपनी भावनाओं के बारे में आपस में बात कर सकते हैं। यहाँ संसाधक की भूमिका निभाते हुए बच्चों को सही दिशा में मार्गदर्शन करना और अपने अनुभव के माध्यम से पाठ के पीछे का ज्ञान और अवधारणा प्रदान करके उनमें सुधार करना है।

चिंतन-मनन

विषयवस्तु की समझ बनने के बाद अमूर्त अवधारणा विकसित करने के लिए, शिक्षक बच्चों की सीख के आधार पर उनकी प्रतिक्रिया जानेंगे। इस चरण में कक्षा में विभिन्न गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं, जैसे— अपने सुंदर जादुई बगीचे का चित्रण करना, बच्चों के बीच प्रश्नोत्तरी करना, विभिन्न तरीकों का चित्रण करना, जिससे हम एक पौधे की देखभाल कर सकते हैं। यह चरण बच्चों को उन विचारों को सोचने और लिखने में मदद करेगा, जो वे सक्रिय भागीदारी के अगले चरण में दुनिया में प्रदर्शन कर सकते हैं।

सक्रिय भागीदारी (योजना)

इस अवस्था में शिक्षक को बच्चों को ऐसा वातावरण देने की आवश्यकता होती है जिसमें बच्चे सीखे गए विचारों को लागू कर सकें और देख सकें कि बाहरी दुनिया में क्या हो रहा है। इस पाठ को पढ़ाते समय शिक्षक बच्चे से एक पौधा उगाने के लिए कह सकते हैं और उन्हें इसकी देखभाल करने के लिए कह सकते हैं और देख सकते हैं कि एक पौधा कैसे बढ़ता है और हर दिन पौधे का अवलोकन करें। पौधारोपण के बाद शिक्षक उनके साथ अनुभव पर चर्चा कर सकते हैं

> "शिक्षण और सीखना अधिक संवादात्मक तरीके से संचालित होगा; सवाल पूछने को प्रोत्साहित किया जाएगा और कक्षाओं में नियमित रूप से अधिक रुचिकर, रचनात्मक, सहयोगात्मक और खोजपूर्ण गतिविधियाँ होगी ताकि गहन और प्रायोगिक सीख सुनिश्चित किया जा सके।" (4.5, एन.ई.पी. 2020)

और उन्हें पौधे के प्रति जिम्मेदार होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और बड़े पैमाने पर वे पर्यावरण में भी योगदान दे रहे हैं।

बुनियादी स्तर के शिक्षण में शिक्षक की भूमिका

बुनियादी स्तर के शिक्षण में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि इस स्तर की शिक्षा बच्चों की आधारभूत ज्ञान, सृजनात्मकता और सामाजिक उन्नति की नींव रखी जाती है। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण कारक हैं, जो शिक्षक भूमिका को बनाए रखने में मदद करते हैं—

आधारभूत ज्ञान प्रदान करना— शिक्षक का कार्य होता है बच्चों को आधारभूत ज्ञान देना, जैसे कि भाषा, गणित, और विज्ञान की समझ विकसित करना। इससे बच्चे आगे की कक्षाओं में भी अच्छी तरह से सीख सकते हैं। इसके अंतर्गत शिक्षक को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* द्वारा दी गई फॉउंडेशन लिटरेसी एंड न्यूमरेसी (एफ.एल.एन.) नीति को ध्यान में रखते हुए अपनी कक्षा में पढ़ना है।

विद्यार्थियों से सहभागिता बनाए रखना— शिक्षक को बच्चों के साथ सहभागिता बनाने में सहायक होना चाहिए, जिससे कि उनके शिक्षण में रुचि लें और वे अच्छे से सीख सकें। इस स्तर पर शिक्षक बच्चों को आस-पास के स्थान पर भ्रमण के लिए ले जा सकते हैं, जैसे— विद्यालय, उद्यान, सार्वजनिक पेयजल व्यवस्था, बस स्थानक, रेलवे स्थान आदि।

बच्चों के साथ संवाद स्थापित करना— शिक्षक को बच्चों के साथ संवाद बनाए रखना चाहिए, ताकि वह उनकी काल्पनिक योजनाएँ समझ सकें और उन्हें सही मार्ग पर चलाने में मदद कर सकें। बुनियादी स्तर पर बच्चों को बातें करना बहुत पसंद होता है, शिक्षक को उन्हें बोलने का और उनकी बाते सुनने का अवसर कक्षा में प्रदान करना चाहिए।

सृजनात्मकता को बढ़ावा देना— बुनियादी स्तर पर, शिक्षक को बच्चों को सृजनात्मक और विचारशील बनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे उनकी सोचने की क्षमता बढ़ती है और वे स्वयं सैद्धांतिक रूप से सीखने के लिए प्रेरित होते हैं। इसमें शिक्षक बच्चों को चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं, क्योंकि इस स्तर के बच्चे अपनी बातों को चित्र के माध्यम से बताना ज्यादा मजेदार समझते हैं।

सामाजिक और नैतिक शिक्षा— शिक्षक को बच्चों को सामाजिक और नैतिक मूल्यों का संबोधन करने में मदद करना चाहिए। इससे वे समाज में जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं। बच्चों को कहानी सुनना और सुनाना बहुत पसंद होता है, शिक्षक इस प्रक्रिया को अपनाते हुए बच्चों में अच्छी आदतें और मूल्यों का विकास कर सकते हैं।

निष्कर्ष

शिक्षण प्रक्रिया बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है, लेकिन इस प्रक्रिया को संचालित करने में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। शिक्षक, शिक्षण को सक्रिय बनाए रखने के लिए उत्तरदायी हैं, क्योंकि विद्यालय में शिक्षकों की जिम्मेदारी महत्वपूर्ण होती है। शिक्षण

को सक्रिय व रुचिपूर्ण बनाने में शिक्षक की कक्षा में शिक्षण विधियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए शिक्षकों को बच्चों के अधिक से अधिक अनुभवों को कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करना चाहिए जिससे बच्चे अपने अधिगम में रुचि रखकर निरंतर सीखने की प्रक्रिया को लंबे समय तक बनाए रखें। लेख में एक संभावित प्रारूप की भी चर्चा की गई है जो अनुभव द्वारा सीखने का व्यवस्थित रूप है।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2022 *राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.